बकरीआजीविका का एक सुरक्षित स्रोत

डॉ.ममता, डॉ.रजनीश सिरोही एवं डा. दीप नारायण सिंह
सहायक आचार्य, दुवासु, मथुरा

हम सभी जानते हैं कि बकरियां बहुआयामी पशुधन हैं जिनसे कई प्रकार के उत्पादों का उत्पादन किया जा सकता है जैसे, दूध, मांस, फाइबर, खाद आदि। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब या आम आदमी की 'गाय' के नाम से प्रचलित बकरी इसके पालन के लाभों को दृष्टिगत रखते हुए हमेशा से ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है । इस लेख में बकरी पालन के लाभों का उल्लेख निम्नवत किया गया है। हम सभी जानते हैं कि बकरियां बहुआयामी पशुधन हैं जिनसे कई प्रकार के उत्पादों का उत्पादन किया जा सकता है जैसे, दूध, मांस, फाइबर, खाद आदि। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब या आम आदमी की 'गाय' के नाम से प्रचलित बकरी इसके पालन के लाभों को दृष्टिगत रखते हुए हमेशा से ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है । इस लेख में बकरी पालन के लाभों का उल्लेख निम्नवत किया गया है।

बकरी पालन के लाभः

1. बकरी उत्पाद स्वस्थ और आसानी से पचने योग्य होते हैं

बकरी के उत्पाद जैसे दूध और मांस न केवल पौष्टिक और आसानी से पचने योग्य होते हैं, बल्कि गरीब, भूमिहीन और सीमांत किसानों के लिए नियमित आय का एक बड़ा स्रोत हैं। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय आय में बहुत योगदान देता है। इसका मांस और दूध कोलेस्ट्रॉल मुक्त और आसानी से पचने योग्य होता है। बकरी के दूध का उपयोग विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ बनाने के लिए किया जाता है। वे एक ही समय में दूध, मांस, त्वचा, फाइबर और खाद का उत्पादन कर सकती हैं।

2. आसान रखरखाव और कम पूंजी

छोटा जानवर होने के कारण इसके रख-रखाव में लागत भी कम होती है । सूखा पड़ने के दौरान भी इसके खाने का इंतजाम सरलता से हो सकता है। इसकी देखभाल का कार्य भी महिलाएं एवं बच्चे आसानी से कर सकते हैं और साथ ही जरुरत पड़ने पर इसे आसानी से बेचकर अपनी जरूरत भी पूरी की जा सकती है। सूखे की वजह से जहा बड़े जानवरों के लिए चारा आदि की समुचित व्यवस्था आदि करना एक मुश्किल कार्य होने के वजह से ऐसे इलाको मे लोग अब बकरी पालन को प्राथमिकता दे रहे है । उदाहरण के लिये उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकतर लघु एवं सीमांत किसान आय कम होने के कारण सपरिवार एक या दो जानवर अवश्य पालते हैं, ताकि उनके लिए दूध की व्यवस्था होती रहे. इनमें गाय, भैंस और बकरी आदि शामिल होती हैं ।एक सफल बकरी किसान होने के लिए, किसी को कुछ सामान्य कार्य करने की आवश्यकता होती है जैसे कि, खिलाना, दूध देना और देखभाल करना। इन कार्यों में अधिक उपकरण, पूंजी, श्रम या कड़ी मेहनत की आवश्यकता नहीं होती है। निवेश अनुपात पर उनका रिटर्न भी बहुत अच्छा है। चूंकि बकरी पालन व्यवसाय बहुत लाभदायक है, इसलिए कई सरकारी और गैर सरकारी बैंक इस व्यवसाय को शुरू करने के लिए ऋण दे रहे हैं। ज्यादातर लोग खेती किसानी के साथ बकरी पालन का कार्य करते हैं। ऐसी स्थिति में ये बकरियां खेतों और जंगलों में घूम-फिर कर अपना भोजन आसानी से प्राप्त कर लेती है। अतः इनके लिए अलग से दाना-भूसा आदि की व्यवस्था बहुत कम मात्रा में करनी पड़ती है। दो से पांच बकरी तक एक परिवार बिना किसी अतिरिक्त व्यवस्था के आसानी से पाल सकता है। घर की महिलाएं बकरी की देख-रेख आसानी से कर सकती हैं और खाने के बाद बचे जूठन से इनके भूसा की सानी कर दी जाती है। ऊपर से थोड़ा बेझर का दाना मिलाने से इनका खाना स्वादिष्ट हो जाता है।

3. एक विशाल क्षेत्र की आवश्यकता का न होना

अपने छोटे शरीर के आकार के कारण बकरियों को आवास के लिए एक विशाल क्षेत्र की आवश्यकता नहीं होती है। वे आसानी से अपने मालिकों या अपने अन्य पशुओं के साथ अपने रहने की जगह साझा कर सकती हैं। कुल मिलाकर बकरियां अन्य घरेलू जानवरों के साथ मिश्रित खेती के लिए बहुत उपयुक्त हैं। बकरी पालन करने के लिए पशुपालक को अलग से किसी आश्रय स्थल की आश्यकता नहीं पड़ती। उन्हें वो अपने घर पर ही आसानी से रख सकते हैं। बड़े पैमाने पर यदि बकरी पालन का कार्य किया जाएं, तब उसके लिए अलग से बाड़ा बनाने की जरुरत पड़ती है।

4. प्रजनन क्षमता

बकरियां न केवल प्रकृति के बहुत अनुकूल हैं, बल्कि उत्कृष्ट प्रजनक भी हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वे अपनी 7-12 महीने की उम्र में यौन परिपक्वता तक पहुंच जाते हैं और थोड़े समय के भीतर बच्चों को जन्म देते हैं। इसके अलावा, कुछ बकरी की नस्ल प्रति ब्यात पर कई बच्चे पैदा करती है। एक बकरी लगभग डेढ़ वर्ष की उम्र में बच्चा प्रजनन करने की स्थिति में आ जाती है और 6-7 माह में प्रजनन करती है। प्रायः एक बकरी एक बार में 3 से 4 बच्चों का प्रजनन करती है और एक साल में दो बार प्रजनन करने से इनकी संख्या में वृद्धि होती है। बच्चे को एक वर्ष तक पालने के बाद ही बेचा जाता है।

5. कम जोखिम

किसी अन्य पशुधन कृषि व्यवसाय की तुलना में बकरी पालन के लिए सूखा प्रभावित क्षेत्रों में भी कम जोखिम है। बकरियों को आवश्यकतानुसार दूध लिया जा सकता है जोकि दूध भंडारण समस्याओं को भी रोकता है।

6. बाजार में समान मूल्य

किसी अन्य पशुधन की तुलना में बाजार में नर और मादा दोनों बकरियों का मूल्य लगभग बराबर होता है । इसके अलावा, बकरी पालन और मांस की खपत के प्रति कोई धार्मिक निषेध भी नहीं है। इसलिए, व्यावसायिक बकरी पालन ने बेरोजगार लोगों के लिए रोजगार का एक संभावित विकल्प उपलब्ध किया है। उनके मांस की स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भारी मांग और आकर्षक मूल्य है।

7. अनुकूलता

बकरियां लगभग सभी प्रकार के कृषि जलवायु वातावरण और स्थितियों के साथ खुद को ढालने में बहुत सक्षम हैं। अन्य पशुओं की तुलना मे इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है और वे उच्च और निम्न तापमान को भी सहन करते हुए रह सकती हैं।

8. गुणकारी दुग्ध निर्माता

इस गुण के कारण, बकरियों को लोकप्रिय रूप से “मानव की पालक माँ” कहा जाता है। उनके दूध को पशुओं के दूध की किसी भी अन्य प्रजाति की तुलना में मानव उपभोग के लिए सबसे अच्छा दूध माना जाता है। दूध कम लागत वाला, पौष्टिक, पौष्टिक और आसानी से पचने वाला होता है। वास्तव में, बच्चे से लेकर बूढ़े तक सभी वृद्ध लोग बकरी के दूध को आसानी से पचा सकते हैं। बकरी के दूध से एलर्जी की समस्या भी कम होती है। यह उन लोगों के लिए एक आयुर्वेदिक दवा के रूप में भी उपयोग किया जाता है जो मधुमेह, अस्थमा, खांसी आदि से पीड़ित हैं।

9. प्राकृतिक उर्वरक

बकरी की खाद का उपयोग फसल के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता वाले प्राकृतिक उर्वरक के रूप में किया जा सकता है जो सीधे फसल उत्पादन को अधिकतम करने में मददगार होता है ।

बकरी पालन से जुड़े ये लाभ बकरी पालन को कम पूंजी में एक सफल व्यवसाय की शुरुआत की अनुकूलता को इंगित करते हैं। बकरी पालन को इसकी बहु-उपयोगिता और तेजी से बढ़ती दर के कारण पारंपरिक, लाभदायक, कम-जोखिम और बहुत आसान व्यवसाय के रूप में संपन्न किया जा सकता है। इसका उपयोग गरीबी उन्मूलन के लिए एक उपकरण के रूप में भी किया जाता है और यह देश की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।